महाप्रस्थानिकपर्व कथासार

महाप्रस्थान पर्व में तीन अध्याय तथा ११० श्लोक हैं।

प्रथम अध्याय-- द्रौपदी सहित पाण्डवों का महाप्रस्थान :--

मौसल युद्ध में वृष्णिवंशियों का परस्पर संहार समाचार तथा श्रीकृष्ण के परमधाम पधारने की वार्ता सुनकर युधिष्ठिर महाप्रस्थान का निश्चय करके अर्जुन से बोला कि काल ही संपूर्ण भूतों को पका रहा है। काल के बन्धन को मैं स्वीकार करता हूँ। तुम भी इसे देख सकते हो। अर्जुन ने उसके वचन का अनुमोदन किया। भीमसेन, नकुल और सहदेव ने भी बडे भाई के वचन का अनुमोदन किया। तत्पश्चात् युधिष्ठिर ने वैश्यापुत्र युयुत्सु को राज्य की देखभाल का भार सौंप दिया। परीक्षित को राज्याभिषिक्त किया। उसने सुभद्रा से कहा कि तुम्हारे पुत्र का पुत्र परीक्षित् कुरुदेश का राजा तथा श्रीकृष्ण का पौत्र वज्र बचे हुये यादवों का राजा बनाया गया। इसके बाद पाण्डवों ने वल्कल धारण करके महाप्रस्थान के लिये निकले। पाँचों भाई, द्रौपदी और एक कुत्ता ये सब साथ साथ चले। आगे युधिष्ठिर चलते थे। उनके पीछे भीमसेन, भीमसेन के पीछे अर्जुन, अर्जुन के पीछे नकुल, उनके पीछे सहदेव चलते थे। इन सब के पीछे द्रौपदी चलती थी। उनके पीछे एक कुत्ता जा रहा था। मार्ग में अग्निदेव प्रत्यक्ष हुआ। उसके आदेश के अनुसार अर्जुन ने गाण्डीव धनुष को वरुण भगवान् को वापस करने के लिये उसे पानी में फेंक दिया। आगे जाकर उन्होंने समुद्र में डूबी हुई द्वारका को देखा।

द्वितीय अध्याय-- युधिष्ठिर के द्वारा मार्ग में द्रौपदी आदि के गिरने का कारण बताना:--

महाप्रस्थान के संदर्भ में पाण्डवों ने उत्तर दिशा की यात्रा में हिमालय तथा मेरु पर्वत का दर्शन किया। योग धर्म को अपनाकर अतिशीघ्र वे आगे चल रहे थे। इतने में द्रौपदी का मन योग से भ्रष्ट हो गया और वह पृथ्वी पर गिर पडी। भीमसेन ने युधिष्ठिर से द्रौपदी के नीचे गिरने का कारण पूछा। उसने कहा कि द्रौपदी के मन में अर्जुन के प्रति विशेष पक्षपात था। आज यह उसी का फल भोग रही है। थोडी देर में सहदेव भी धरती पर गिर पडा। इसका कारण पूछने पर युधिष्ठिर ने उससे कहा कि सहदेव किसी को अपना जैसा विद्वान् नहीं समझता। उसके पतन का दोष यही है। उन दोनों को छोडकर पाण्डव कुत्ते के साथ आगे बढे। कृष्णा और सहदेव के गिरने से चिंतित नकुल भी गिर पडा। युधिष्ठिर ने कहा कि हे भीमसेन! नकुल सदा सोचता था कि 'मैं हि सबसे अधिक रूपवान् हूँ'। इसका फल भोग रहा है। इसलिये वह नीचे गिरा। तीनों के गिरने से शोकसंतप्त अर्जुन भी गिर पडा। भीमसेन के पूछने पर युधिष्ठिर ने कहा कि अर्जुन को अपने पराक्रम के विषय में अभिमान है कि 'मैं एक ही दिन में शत्रुओं को भस्म कर डालूँगा'। इसका फल वह भोग रहा है। इतने में भीमसेन भी गिर

पडा। उसने युधिष्ठिर को पुकारकर गिरने का कारण पूछा। उसने कहा कि हे भीमसेन! बल पर तुझे अधिक गर्व है। यही नीचे गिरने का कारण है। ऐसा कहकर युधिष्ठिर आगे बढा। कुत्ता भी उसका अनुसरण करता रहा।

तृतीय अध्याय-- धर्म में दृढ रहकर युधिष्ठिर सदेह स्वर्गलोक जानाः--

देवराज इन्द्र रथ के साथ युधिष्ठिर के पास पहुँचा और रथ पर सवार होने को युधिष्ठिर से कहा। युधिष्ठिर ने कहा कि हे देवेन्द्र! मेरे भाईयाँ मार्ग में गिर पडे हैं। उन्हें भी मेरे साथ ले जाने की व्यवस्था कीजिए। उनके बिना स्वर्ग में जाना मैं नही चाहता। इन्द्र ने कहा कि हे भरतश्रेष्ठ! द्रौपदी सहित तुम्हारे भाई मानव शरीर छोडकर तुमसे पहले ही स्वर्ग पहुँच गये हैं। तुम इस शरीर से वहाँ चलोगे। युधिष्ठिर ने कहा कि हे देवराज! यह कुत्ता मेरा भक्त है। मेरे साथ साथ चलते आया। अतः यह भी मेरे साथ चले। इन्द्र ने कुत्ते को छोडकर उसके साथ चले आने को कहा। युधिष्ठिर उसका तिरस्कार किया। फिर इन्द्र ने कहा कि कुत्ते को स्वर्गलोक में स्थान नहीं है। इसे छोडकर मेरे साथ आना। युधिष्ठिर ने कहा कि भक्त का त्याग करना महापाप है। इसलिये मैं इस कुत्ते का त्याग नहीं करूँगा। इन्द्र ने स्पष्ट किया कि कुत्ते को छोडने से ही तुम स्वर्गलोक में पहुँच सकोगे। युधिष्ठिर ने कहा कि शरणागत को भय देना, स्त्री का वध करना, ब्राह्मण का धन लूटना तथा मित्र द्रोह इन चार के मिलन से जो अधर्म होता है उसका बराबर ही भक्त को त्याग करने से होता है। युधिष्ठिर का यह वचन सुनकर कुत्ते का रूप धारण करके आये धर्मस्वरूप भगवान बडे प्रसन्न हुये और कहा कि हे पुत्र! कुत्ते को भक्त समझकर स्वर्ग को भी छोड दिया। इसलिये स्वर्गलोक में तुम्हारे समान दूसरा कोई राजा नहीं है। इसके पश्चात धर्म, इन्द्र, तथा महर्षिगण ने युधिष्ठिर को रथ पर बिठाकर अपने विमानों द्वारा स्वर्गलोक को प्रस्थान हुए। तपस्वी नारद ने कहा कि युधिष्ठिर अपने सुयश से स्वर्ग के राजर्षि की कीर्ति को आच्छादित करके विराजमान हो रहे हैं। भौतिक शरीर से स्वर्गलोक में आने का सौभाग्य केवल युधिष्ठिर को ही प्राप्त हुआ है और किसी राजा को प्राप्त नहीं हुआ।

नारद महर्षि की बात सुनकर युधिष्ठिर ने इन्द्र से कहा कि हे देवेश्वर! मेरे भाइयों को शुभ या अशुभ जो भी स्थान प्राप्त हुआ है उसीको मैं भी पाना चाहता हूँ। उसके सिवा दूसरे लोक में जाने की इच्छा मुझे नहीं है। उसकी बात सुनकर इन्द्र ने कहा कि शुभ कर्मों के द्वारा तुझे उत्तम गति प्राप्त हुई जिसे दूसरा मनुष्य नहीं पा सका। इस स्थान को अपने भाई प्राप्त नहीं कर सके। इसलिये स्वर्गलोक में निवास करो। युधिष्ठिर ने फिर कहा कि अपने भाई तथा द्रौपदी के बिना मुझे यहाँ रहने का उत्साह नहीं है। अतः मेरे भाई जहाँ गये हैं वहीं मैं भी जाना चाहता हूँ।

।। महाप्रस्थानिकपर्व कथासार समाप्त ।।